Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

इतिहास

National Testing Agency (NTA)

पेपर 2 || भाग – 1

SIERRA
INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	प्राचीन इतिहास	
1.	**इतिहास का परिचय व उसके स्त्रोत**	1
	➢ परिचय	1
	➢ साहित्यिक स्त्रोत	6
	➢ महाकाव्य	13
2.	**पाषाण काल**	16
	➢ पुरापाषाण काल	16
	➢ मध्य पाषाण काल (10000 ई. पू. – 6000 ई. पू.)	23
	➢ नवपाषाण काल : Neolithic Age (6000 ई. पू. – 1000 ई. पू.)	26
3.	**महापाषाण संस्कृति**	34
	➢ महापाषाण स्थलों का क्षेत्र	36
	➢ ताम्र पाषाण काल (Chalcolithic Age) 4000 BC–1500 BC	37
	➢ भारत के अन्य ताम्र पाषाण कालीन स्थल	44
4.	**सिंधु घाटी सभ्यता / हड़प्पा सभ्यता**	45
	➢ सिंधु सभ्यता की जानकारी/परिचय	45
	➢ प्रथम - मिश्र की सभ्यता और दूसरी – मेसोपोटामिया	47
	➢ सिंधु सभ्यता का आर्थिक जीवन	59
	➢ सिंधु सभ्यता / हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगर स्थल	64
	➢ सिंधु सभ्यता की कला एवं स्थापत्य	70
5.	**वैदिक सभ्यता**	79
	➢ वैदिक सभ्यता का स्वरूप	79
	➢ वैदिक काल का विभाजन	83
	➢ ऋग्वेदिक काल का आर्थिक जीवन	89
	➢ उत्तरवैदिक काल (1000 ई.पू. - 600 ई.पू.)	92
	➢ उत्तरवैदिक कालीन धार्मिक जीवन	100
6.	**प्राचीन काल में नवीन धार्मिक सम्प्रदाय का उदय**	105
	➢ परिचय	105
	➢ प्राचीन भारत के कुछ महत्वपूर्ण सम्प्रदाय	105
	✓ जैन धर्म	105
	✓ गौतम बुद्ध व बोद्ध	115
7.	**पौराणिक धर्म**	128
	➢ वैष्णव धर्म (भागवत धर्म)	128
	➢ शैव धर्म	130

	➢ शाक्त धर्म	132
	➢ उत्तर भारत की राजनैतिक दशा (600 ई.पू. - 300 ई.पू.)	134
	➢ महाजनपद काल	135
	➢ मगध साम्राज्य का उत्कर्ष	142
	➢ हर्यक वंश (544 ई.पू. - 412 ई.पू.)	143
	➢ शैशुनाग वंश (412 ई.पू. - 344 ई.पू.)	145
	➢ नन्द वंश (344 ई.पू. - 322 ई.पू.)	145
	➢ यूनानी आक्रमण (सिकन्दर का आक्रमण)	147
	➢ मौर्य साम्राज्य (322 ई.पू. - 185 ई.पू.)	151
	➢ चन्द्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू. - 298 ई.पू.)	151
	➢ बिन्दुसार (298 ई.पू. - 273 ई.पू.)	154
	➢ सम्राट अशोक (273 ई.पू. - 232 ई.पू.)	155
8.	**मौर्यकालीन प्रशासन**	160
	➢ केन्द्रीय प्रशासन	160
	➢ प्रान्तीय प्रशासन	162
	➢ नगर प्रशासन	163
	➢ सैन्य प्रशासन	165
	➢ मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था	166
	➢ उद्योग	166
	➢ मौर्यकालीन मुद्रा प्रणाली	167
	➢ मौर्यकालीन कला	168
	➢ मौर्यकालीन साहित्य	171
	➢ शुंग वंश – (185 ई.पू. – 75 ई.पू.)	177
	➢ सातवाहन वंश	181
	➢ इक्ष्वाकु वंश	185
9.	**मौर्योत्तर काल**	186
	➢ विदेशी आक्रमण	186
	✓ इण्डो-ग्रीक (यवन)	186
	✓ यवन-अधिपत्य का प्रभाव	188
	✓ पह्लव (पार्थियन)	189
	✓ शक (सीथियन)	189
	✓ पश्चिमी क्षत्रप: क्षहरात वंश	190
	✓ कार्दमक वंश (चष्टन वंश)	191
	➢ कुषाण राजवंश	192
	✓ कुषाण कला	195
	➢ गुप्तकाल	197
	➢ गुप्त प्रशासन एवं संस्कृति	211

	✓ केन्द्रीय प्रशासन ✓ प्रान्तीय प्रशासन ✓ जिला प्रशासन / नगर प्रशासन ✓ ग्राम प्रशासन ✓ न्याय प्रशासन ✓ सैन्य प्रशासन ➢ आर्थिक जीवन ➢ वर्धन वंश / पुष्यभूति वंश ➢ हर्षवर्धन का प्रशासन	211 212 212 212 213 213 214 225 232
10.	**संगम काल** ➢ दक्षिण भारत के राजवंश ➢ संगम काल के तीन प्रमुख राजवंश — चेर, चोल, पाण्ड्य ✓ चेर राज्यवंश ✓ चोल वंश/राज्य ✓ पाण्ड्य राज्य / वंश ➢ आर्थिक जीवन	235 235 239 239 240 241 242

1 CHAPTER

इतिहास का परिचय व उसके स्त्रोत

इतिहास का परिचय व उसके स्त्रोत

इतिहास :- अतीत की घटनाओं का वर्तमान में अध्ययन ही इतिहास है।"

- अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध अध्ययन इतिहास कहलाता है।
- इतिहास शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है।
- इतिहास के जनक/Father of History/इतिहास के पिता:- हेरोडोटस
- हेरोडोटस यूनान के मूल निवासी थे
  - ✓ पुस्तक - हिस्टोरिका (Historica)
- इस पुस्तक में भारत व फारस के संबंधों का वर्णन है।
- इतिहास को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करने वाले प्रथम विद्वान थे।

इतिहास की प्रमुख परिभाषाएं व विद्वान

- "सम्पूर्ण इतिहास विचारों का इतिहास है"- आर जी कॉलिंगवुड
- "इतिहास व्यक्ति को बुद्धिमान बनाने में सहायक है" - फ्रांसिस बेकन
- "सम्पूर्ण इतिहास समसामयिक इतिहास है"- बेनडिटो क्रोचे
- "इतिहास, अतीत व वर्तमान के मध्य होने वाला ई. एच. कार अंतहीन संवाद है"
- "इतिहासकार जिसे लिखता है वही इतिहास है"- जी. आर. एल्टन
- इतिहास लैटिन भाषा का शब्द है।
- इतिहास को तीन भागों में बांटा गया है- (लिपि के आधार पर)
  1. प्रागैतिहासिक काल/आदिमानव काल
  - ✓ इतिहास का वह काल जिसमें कुछ भी लिखा हुआ नहीं मिला। जैसे - पाषाण काल, ताम्र पाषाण काल।
  2. आद्य ऐतिहासिक काल सभ्यताओं का काल
  - ✓ इतिहास का वह काल जिसमें लिखा हुआ मिला है लेकिन पढ़ा नहीं जा सका। जैसे- हड़प्पा सभ्यता।
  3. ऐतिहासिक काल व्यवस्थित राजनैतिक घटनाक्रम।
  - ✓ इस काल में लिखा हुआ भी मिला है और उसे पढ़ा भी गया है। जैसे:- महाजनपद काल से वर्तमान तक का इतिहास
- आदि मानव इतिहास की जानकारी अनुमानों पर आधारित है।
- सभ्यताओं का इतिहास साक्ष्य /सबूतों पर आधारित है।
- व्यवस्थित इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्रोत साहित्य व लिखित प्रमाण पर आधारित है।
- महान विद्वान जेम्स मिल ने अपनी पुस्तक History of British India में भारत के इतिहास को तीन भागों में बांटा है।
  1. प्राचीन काल (Ancient History) - हिन्दुओं का काल
  2. मध्यकाल (Medieval History) - मुस्लिम शासन
  3. आधुनिक काल (Modern History) - अंग्रेजी काल

  (यह विभाजन अध्ययन की दृष्टि से किया गया है।)

- प्राचीन भारत का पहला सुव्यवस्थित इतिहास "The Early History of India" है।
- यह पुस्तक 1904 में वी. ए. स्मिथ ने लिखी थी।
- स्मिथ आयरलैंड के निवासी थे। इनका जन्म 1843 ई. में डबलिन हुआ।
- भारतीय इतिहास को समझने के लिए इसे तीन स्रोतों में बांटा जा सकता है।
  1. पुरातात्विक स्रोत।
  2. साहित्यिक स्रोत।
  3. विदेशी यात्रियों के विवरण।

1. पुरातत्व संबंधी साक्ष्य

- इसमें पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई सामग्रियों को शामिल किया जाता है।
- इसमें मुख्यतः खुदाई में निकली सामग्री, स्मारक, अभिलेख, मुद्रा ताम्रपत्र, भवन, मूर्तियां आदि आते हैं।
- पुरातत्व उत्खनन लंबवत व क्षैतिज दो प्रकार से किया जाता है।
- देश में पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना-1861 में
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के संस्थापक/जनक/जन्मदाता अलेक्जेंडर कनिंघम
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना के समय भारत के वायसराय लॉर्ड कैनिंग थे।
- अलेक्जेंडर कनिंघम इस विभाग के प्रथम महानिदेशक थे।
- भारत में पाषाण कालीन सभ्यता की खोज का कार्य सर्वप्रथम 1863 ई. में अलेक्जेंडर कनिंघम द्वारा प्रारंभ हुआ।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का मुख्यालय दिल्ली में है।
- यह पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अधीन कार्यशील है।
- तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का पुनर्गठन किया।
- इस समय सर जॉन मार्शल इसके महानिदेशक बने।

1. अभिलेख:

- ✓ पुरातात्विक स्रोतों में सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।
- ✓ अभिलेख-शिलाओं, स्तंभों, ताम्रपत्रों, दीवारों आदि पर खुदे मिले हैं।
- ✓ विश्व के सबसे प्राचीन अभिलेखों में बोघजकोई अभिलेख है।
- ✓ यह अभिलेख (एशिया माइनर) तुर्की से 1400 ई. पू. का मिला है।
- ✓ बोघजकोई अभिलेख की खोज ह्यूंको विंकलर ने 1907 में की।
- ✓ इस अभिलेख की लिपि कीलाक्षर तथा भाषा हिन्द यूरोपीय है।
- ✓ यह हित्ती नरेश सप्पिलुल्युमा तथा मित्तानी नरेश मतिवजा के बीच संधि का उल्लेख करता है।
- ✓ इसमें वैदिक देवताओं इन्द्र, वरुण, मित्र, व नासत्य के नाम मिले हैं।
- ✓ हित्ती तथा मित्तानी के मध्य इन्हीं देवताओं को संधि का साक्षी माना गया है।
- ✓ भारत में सर्वप्रथम अभिलेख लिखवाने वाला प्रमाणिक शासक सम्राट अशोक था।
- ✓ अशोक को अभिलेखों की प्रेरणा ईरान के हखामनी वंश के राजा डेरियस/दारा I से मिली थी।
- ✓ नक्श-ए-रुस्तम, बेहिस्तून तथा पर्सिपोलिस के अनुसार डेरियस ने सिंधु नदी के क्षेत्र पर अधिकार किया था।
- ✓ नक्श-ए-रुस्तम को डीएनए अभिलेख कहा जाता है।
- ✓ भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख सम्राट अशोक के माने जाते हैं।
- ✓ भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में पिप्रहवा नामक स्थान से मिला है। जिसे पिप्रहवा का अभिलेख कहा जाता है।
- ✓ अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेख शास्त्र/एपिग्राफी कहा जाता है।

अभिलेख के प्रकार

1. शिलालेख - शिलाओं पर लिखे गए लेख।
2. स्तंभलेख - स्तंभ/पिलर पर लिखे गए लेख।
3. गुहालेख - गुफाओं की दीवार/चट्टानों पर लिखे गए लेख।
4. प्रशस्ति लेख - राजाओं की प्रशंसा में लिखे गए लेख।

- मौर्य सम्राट अशोक ने सभी प्रकार के अभिलेख लिखवाए थे।
- ईरान के शासक दारा I से प्रभावित होकर अशोक ने अभिलेख लिखवाए।
- अशोक ने अपने अभिलेख ब्राह्मी लिपि तथा खरोष्ठी लिपि में लिखवाए।
- पाकिस्तान और अफगानिस्तान में अरेमाइक तथा यूनानी लिपि में भी मिले हैं।
- अशोक के अभिलेखों की प्रमुख लिपियाँ- ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरेमाइक तथा यूनानी थीं।
- अशोक के अभिलेखों की भाषा प्राकृत है।
- भारत में मिले अभिलेख प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में हैं।
- अशोक के अभिलेखों की खोज सर्वप्रथम 1750 में टिफेन्थेलर ने की।
- टिफेन्थेलर ने यह खोज दिल्ली-मेरठ स्तंभ लेख के रूप में की थी।
- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा।
- अशोक के अभिलेखों की ब्राह्मी लिपि को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने ही पढ़ा था।
    1. **ब्राह्मी लिपि** - भारत में (लिखावट-बाएं से दाएं)
    2. **खरोष्ठी** - पाकिस्तान (दाएं से बाएं)
    3. **यूनानी** - अफगानिस्तान (नीचे से बाएं)
    4. **अरामाइक** - पाकिस्तान (नीचे से दाएं)
- अशोक के अभिलेखों से उसके शासनकाल की जानकारी मिलती है।
- उसके मुख्य शिलालेख 8 स्थानों से, जिसमें 14 लेख प्राप्त हुए हैं।

स्थान	खोजकर्ता	समय ई. में	
1.	गिरनार (गिरनार, गुजरात)	कर्नल टॉड	1822
2.	धोली (पुरी, ओडिशा)	कर्नल किट्टो	1837
3.	जौगढ (गंजाम, ओडिशा)	इलियट	1850
4.	कालसी (देहरादून, उत्तराखण्ड)	फॉरेस्ट	1860
5.	सोपारा (थाना, महाराष्ट्र)	भगवान लाल	1882
6.	एरंगुडि (कर्नूल आंध्र प्रदेश)	अनुघोष	1929
7.	शाहबाज गढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान)	कोर्ट	1836
8.	मानससहरा (हजारा, पाकिस्तान)	कनिंघम	1889

- सबसे पहले खोजा गया मुख्य शिलालेख - गिरनार
- सबसे बाद में खोजा गया मुख्य शिलालेख - एर्रगुडि
- अशोक का सबसे लंबा अभिलेख - भाब्रू लघु शिलालेख है जो राजस्थान के कोटपूतली-बहरोड़ के बैराठ से मिला था।
- अशोक का सबसे छोटा अभिलेख - रूम्मिनदेई स्तंभ लेख है।
- पाकिस्तान में स्थित शाहबाजगढ़ी तथा मानसेहरा शिलालेख खरोष्ठी लिपि में हैं।

- खरोष्ठी लिपि का उद्भव ईरान में हुआ था।
- आंध्र प्रदेश में स्थित एर्रगुडि अभिलेख खरोष्ठी तथा ब्राह्मी दोनों लिपियों में है।
- अन्य सभी मुख्य शिलालेख ब्राह्मी लिपि तथा प्राकृत भाषा में हैं।
- अशोक के अभिलेखों से उसकी राज्य सीमा, उसके धर्म तथा उसकी शासन नीति पर प्रकाश पड़ता है।

प्राचीन भारत पर प्रकाश डालने वाले अन्य प्रमुख अभिलेख

- **हाथीगुम्फा अभिलेख** - कलिंग के राजा खारवेल का है।
- यह ओडिशा के भुवनेश्वर के पास उदयगिरि पहाड़ियों में है।
- यह शिलालेख प्राकृत भाषा तथा ब्राह्मी लिपि में है।
- इसकी खोज 1825 ई. में हुई।
- खोजकर्ता - बिशप ए. स्टर्लिंग
- यह भारत में नहर निर्माण का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है।
- 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने इसे पढ़ा।
- भारत के लिए भारतवर्ष का पहला उल्लेख इसी अभिलेख में हुआ है।

रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

- यह विशुद्ध संस्कृत में लिखित प्रथम अभिलेख है।
- यह उज्जैन के शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम ने लिखवाया।
- इसकी शैली चम्पू शैली है। (गद्य-पद्य मिश्रित रूप)
- भारतीय काव्य का प्राचीनतम स्रोत इसी जूनागढ़ में है।
- इस अभिलेख में अशोक तथा चन्द्रगुप्त मौर्य का एक साथ उल्लेख मिलता है।
- यह भारत में स्वयंवर प्रथा का पहला प्रमाणिक अभिलेखीय साक्ष्य है।

एहोल अभिलेख

भाषा-संस्कृत

रचनाकार - रविकीर्ति, 634 ई. में

- इसमें सर्वप्रथम गुर्जर जाति का उल्लेख हुआ है।
- इसमें पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य शासक) द्वारा हर्षवर्धन को पराजित होने का उल्लेख मिलता है।
- इन दोनों शासकों के मध्य यह युद्ध नर्मदा नदी के तट पर लड़ा गया।

गरुड़ध्वज स्तंभ लेख

- लिपि- ब्राह्मी
- भाषा - प्राकृत
- खोज- अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1877 ई. में की।
- यह स्तंभ लेख तक्षशिला के हिन्द यूनानी शासक एण्टियालकिड्स के राजदूत हेलियोडोरस का है।
- यह भागवत धर्म (वैष्णव) के विकास की जानकारी देता है।
- इस अभिलेख से पता चलता है कि हेलियोडोरस भागवत धर्म का अनुयायी था।
- भारत में भूमि अनुदान का प्राचीनतम साक्ष्य नानाघाट अभिलेख में मिला है।

- सप्ताह के दिवस-नाम उल्लेखित प्रथम अभिलेख एरण अभिलेख है।
- श्रीकृष्ण व माता देवकी का उल्लेख करने वाला प्रथम अभिलेख भीतरी स्तंभ लेख है। यह स्कन्दगुप्त का है।
- नहर प्रणाली का उल्लेख करने वाला प्राचीनतम अभिलेख हाथीगुम्फा अभिलेख है, जो कलिंग नरेश खारवेल का है।
- स्थापत्य निर्माण कार्य पर खर्च का विवरण देने वाला प्राचीनतम लेख हाथीगुम्फा अभिलेख है।
- अयोध्या अभिलेख (उत्तर प्रदेश) में पुष्यमित्र शुंग के द्वारा किए गए दो अश्वमेध यज्ञों का वर्णन है।
- स्कन्दगुप्त के भितरी स्तंभ लेख (गाजीपुर UP) से पुष्यमित्र का हूणों के साथ युद्ध का वर्णन है।
- जजमानी प्रथा का वर्णन करने वाला प्रथम अभिलेख नालंदा पुरालेख है।
- ग्रामीण स्थानीय स्वशासन का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य-मुदलईमुलम अभिलेख है।
- प्रयाग प्रशस्ति में समुद्रगुप्त को उसके सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- प्रयाग प्रशस्ति की रचना संस्कृत भाषा में हरिषेण ने की थी।
- यह अशोक के कौशांबी अभिलेख पर उत्कीर्ण है।
- नागरी लिपि में उत्कीर्ण प्राचीनतम अभिलेख-दिध्वादेबौली ताम्रपत्र है।
- यह अभिलेख प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल का है।
- ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश) प्रतिहार शासक मिहिर भोज से संबंधित है।
- इसमें गुर्जर प्रतिहार शासकों की जानकारी मिलती है।
- हाथीगुम्फा अभिलेख (उदयगिरी-उड़ीसा) यह बिना तिथि का अभिलेख है।
- शून्य का उल्लेख करने वाला प्राचीनतम अभिलेख ग्वालियर चतुर्भुज अभिलेख है, जो मिहिरभोज का है।
- एरण अभिलेख (मध्यप्रदेश) से भारत में सती प्रथा का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुआ है। (510 ई. का प्रमाण)
- इस अभिलेख में गुप्त शासक भानुगुप्त के सेनापति गोपराज की पत्नी के सती होने का प्रमाण मिला है।

Note:- अंग्रेजी गवर्नर जनरल विलियम बेंटिक ने अधिनियम-17 के तहत 1829 में कानून बनाकर सती प्रथा को अवैध घोषित कर दिया था।

- शक संवत का प्राचीनतम उल्लेख हिस्से बोराला अभिलेख (जो 458 ई. का है) में मिला है।
- शक संवत का संस्थापक कुषाण शासक कनिष्क था, इसकी शुरुआत 78 ई. में हुई।
- वर्तमान में यह भारत का राष्ट्रीय संवत है।

<u>सिक्के या मुद्रायें</u>

- सिक्कों का अध्ययन मुद्राशास्त्र कहलाता है जिसे अंग्रेजी भाषा में Numismatics कहते हैं।
- मुद्रा शास्त्र का पिता/जनक - जेम्स प्रिंसेप हैं।

Note:- भारत का मुद्राशास्त्री शासक मुहम्मद बिन तुगलक है।

- भारत में प्राचीन सिक्कों को आहत सिक्के / पंचमार्क कहा जाता है।
- देश में सबसे पुराने सिक्के (आहत)-तक्षशिला, उत्तर प्रदेश तथा मगध से मिले हैं।
- इन सिक्कों पर मछली, पहाड़, पेड़, हाथी, सांड तथा सूर्य का अंकन मिलता है।
- समस्त आहत सिक्कों पर सूर्य का अंकन मिला है।
- इन्हीं प्राचीन सिक्कों को साहित्य में 'कार्षपण', 'पुराण,' 'धरण' 'शतमान' आदि भी कहा गया है।
- सिक्कों पर सर्वप्रथम लेख लिखवाने का कार्य यवन शासकों ने किया।
- भारत में सर्वाधिक आहत मुद्रायें मौर्य काल में मिली हैं।

- 1835 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने इन्हें पंचमार्क कहा।
- वासुदेव शरण ने इन सिक्कों को आहत मुद्रा कहा।
- इन सिक्कों का विस्तृत व्याख्यात्मक अध्ययन ई. जे. रैप्सन ने किया है।
- सिक्कों पर सर्वप्रथम राजकीय नियंत्रण मौर्य काल के समय हुआ।
- अधिकांश पंचमार्क सिक्के चांदी धातु के हैं।
- मौर्य काल में मुद्रा एवं टकसाल का अध्यक्ष लक्षणाध्यक्ष कहलाता था।
- रूप दर्शक नामक अधिकारी मुद्रा का परीक्षण करता था।
- भारत में सर्वप्रथम तिथि-युक्त सिक्के शक शासक जीवदामन ने जारी किए थे।
- नियमित रूप से सबसे पहले शुद्ध सोने के सिक्के कुषाणों ने जारी किए।
- पांचाल जनपद के सिक्कों के पृष्ठ भाग पर अंकित चिन्ह अग्रभाग पर दिए राजा के नाम से मेल खाते हैं।
- दक्षिण भारत के स्वर्ण सिक्के 'हूण वराह' या पगोद कहलाते हैं।
- इसी प्रकार तांबे के सिक्के को कासू कहा जाता था।
- इंडो ग्रीक शासकों ने भारत में पहली बार सिक्कों पर शासकों के नाम, देवी देवताओं की आकृतियों और लेख वाले सिक्के चलाने की प्रथा शुरू की।
- भारत में सर्वाधिक चाँदी के सिक्के मौर्यों ने चलाए।
- भारत में सर्वाधिक ताँबे के सिक्के कुषाणों ने तथा सोने के सर्वाधिक सिक्के गुप्तों ने चलाए।
- गुप्त शासक समुद्रगुप्त के सिक्कों पर उसे वीणा बजाते दिखाया गया है।
- गुप्तकाल में चांदी का सिक्का रूपक तथा सोने का सिक्का दीनार कहलाता था।
- गुप्त शासकों में सर्वप्रथम सोने की मुद्रा चन्द्रगुप्त प्रथम ने जारी की।
- सातवाहन शासकों ने सीसे व पोटीन धातु के सिक्के जारी किए।
- सातवाहन शासक यज्ञश्री शातकर्णी के सिक्कों पर जलपोत उत्कीर्ण होने से उसका समुद्र प्रेम तथा उसकी विजय का अनुमान लगाया जाता है।

<u>साहित्यिक स्त्रोत</u>

हमारा साहित्य दो प्रकार का है –

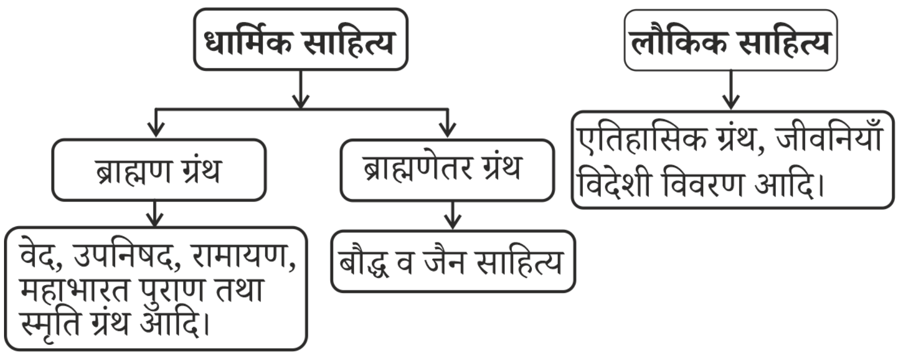

<u>ब्राह्मण साहित्य :-</u>

वेद -

- वेद का अर्थ है ज्ञान या जानना।
- ये भारत के सर्वप्राचीन धर्म ग्रंथ हैं।
- वेदों की संख्या चार है
  1. ऋग्वेद
  2. यजुर्वेद
  3. सामवेद तथा
  4. अथर्ववेद
- वेदों का संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया था।
- भारतीय परंपरा में वेदों को नित्य तथा अपौरुषेय माना गया है।
- चारों वेदों को सम्मिलित रूप से संहिता कहा जाता है।

- वेदों को चार भागों में बांटने का कार्य वेदव्यास जी ने किया।
- श्रवण परंपरा में सुरक्षित होने के कारण वेदों को श्रुति कहा जाता है।
- सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद तथा सबसे नवीन वेद अथर्ववेद है।
- वेदों को लिखित रूप से 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. के बीच रखा जाता है।

1. ऋग्वेद :-

- यह सभी वेदों में प्रथम तथा सबसे प्राचीन माना जाता है।
- इसका लिखित समय 1500 ई. पू. से 1000 ई. पू. माना जाता है।
- इसमें कुल मण्डल - 10
- सूक्त - 1028 (बालखिल्य सूक्त - 11)
- मंत्र – 10600
- ऋग्वेद की पांच शाखाएं हैं-
  1. शाकल
  2. वाष्कल
  3. आश्वलायन
  4. शांखायन
  5. मंडूकायन
- वर्तमान में केवल शाकल संहिता ही उपलब्ध है।
- ऋग्वेद में हस्तलिखित ऋचाएं खिल कहलाती हैं।
- ऋग्वेद में प्रथम, आठवां, नवां तथा दसवां मण्डल परवर्ती काल के हैं।
- सबसे पुराना मण्डल दूसरा तथा सातवां
- सबसे नवीन मण्डल - पहला तथा दसवां
- ऋग्वेद का सबसे प्रमाणिक मण्डल वंश मण्डल को माना जाता है।
- इसके दूसरे से सातवें मण्डल को वंश मण्डल कहा जाता है।
- वंश मण्डल की शुरुआत अग्नि की स्तुति से होती है।
- ऋग्वेद में 200 सूक्त अग्नि से संबंधित हैं।
- अग्नि इन्द्र के बाद दूसरा महत्वपूर्ण देवता था।
- ऋग्वेद में अग्नि को देवताओं का मुख कहा गया है।
- अग्नि देवताओं तथा मनुष्यों के मध्य मध्यस्थ था।
- ऋग्वेद का सबसे महत्वपूर्ण देवता इन्द्र था।
- इसे पुरंदर भी कहा गया है। इन्द्र शब्द का 250 बार प्रयोग हुआ है।
- ऋग्वेद का पहला मण्डल अंगिरा ऋषि को तथा सातवां मण्डल वरुण देव को समर्पित है।
- सातवें मण्डल में अश्वमेध यज्ञ का उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद का नवां मण्डल सोम देवता, को समर्पित है। इसी को सोम मण्डल कहा जाता है।
- ऋग्वेद के तीसरे मण्डल में गायत्री मंत्र का उल्लेख हुआ है।
- गायत्री मंत्र में सवितृ की उपासना गायत्री के रूप में की गई है।
- लक्ष्मी का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में ही हुआ है।
- ऋग्वेद में वरुण तथा मित्र को हजारों स्तम्भों वाले महल में निवास करते वर्णन किया है।

- ऋग्वेद में आर्य का शाब्दिक अर्थ है - श्रेष्ठ। यह किसी धर्म या जाति का सूचक नहीं है वरन गुणवाचक संज्ञा है।
- ऋग्वेद के 10 वें मण्डल में पुरुष सूक्त मिलता है।
- यही 10वां सूक्त नदी सूक्त, नासदीय सूक्त तथा सूर्य सूक्त (विवाह सूक्त) से संबंधित है।
- ऋग्वेद में स्वर्ण आभूषण को निष्क कहा गया है। यह एक गले का हार था।
- ऋग्वेद में सर्वप्रथम वर्ण व्यवस्था का उल्लेख हुआ है।
- गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की थी।
- "मैं कवि हूँ, मेरे पिता भीषण है और मेरी माता अन्न पिसती है" यह अवतरण ऋग्वेद से लिया गया है।
- ऋग्वेद के 10 वें मण्डल के पुरुष सूक्त में समाज की चार वर्ण व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।
- इसी मण्डल में बताया गया है कि चारों वर्णों की उत्पत्ति एक विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से हुई।
- जब विराट पुरुष की बलि दी गई तो
  - ✓ मुख - ब्राह्मण
  - ✓ भुजा - क्षत्रिय
  - ✓ जंघा - वैश्य
  - ✓ पैर - शूद्र
- ऋग्वेद में गाय को सम्पत्ति का मुख्य आधार माना गया है।
- इसी वेद में गाय को अघन्य कहा गया है।
- ऊँट का प्रथम उल्लेख भी इसी ऋग्वेद में हुआ है। आठवें मण्डल का पांचवा और 46 वां श्लोक ऊँट से संबंधित है।
- विष्णु का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद में ही मिलता है।
- इस वेद में विष्णु को त्रिविक्रम, उरुगाय तथा उरुक्रम उपाधियों से विभूषित किया गया है।
- लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी एवं काक्षावृति नामक स्त्रियों ने ऋग्वेद की ऋचाओं की रचना की।
- ऋग्वेद के कुछ जैनी तीर्थकर के नाम भी मिलते हैं।
- देवता बृहस्पति एवं उनकी पत्नी जूही का उल्लेख, ऋग्वेद में हुआ है।
- सर्वप्रथम स्तूप शब्द का उल्लेख इसी ऋग्वेद में हुआ है।
- अयोध्या शब्द का प्रथम उल्लेख भी ऋग्वेद में ही हुआ है।
- ऋग्वेद के सातवें मण्डल में पुरुष्णी (रावी नदी) नदी के तट पर लड़े गए दशराज्ञ युद्ध का उल्लेख किया गया है।

मण्डल	**रचयिता**
प्रथम	रचयिता एक से अधिक
दूसरा	गृहत्समद (विश्व के प्रथम इंजीनियर)
तीसरा	विश्वामित्र
चौथा	वामदेव अंगीरस
पाँचवां	अत्रि
छठा	भारद्वाज अंगीरस
सातवां	वशिष्ठ
आठवां	कण्व व अंगिरा
नवम्	एक से अधिक ऋषि रचयिता
दसवां	एक से अधिक ऋषि रचयिता

- वेदत्रयी :- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद।
- सहिताएं :- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद।
- वेदों का क्रम :- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।
- ऋग्वेद का पहला मण्डल अंगिरा ऋषि को तथा आठवां मण्डल कण्व ऋषि को समर्पित है।

2. सामवेद

- साम का शाब्दिक अर्थ है - गान।
- इसे भारतीय संगीत का मूल कहा जाता है।
- इसमें 75 सूक्तों को छोड़कर बाकी सभी सूक्त ऋग्वेद से लिए गए हैं।
- इसे भारतीय संगीत का जनक माना जाता है।
- सामवेद भारतीय संगीतशास्त्र की सबसे प्राचीनतम पुस्तक है।
- यह वेद आकार में चारों वेदों से छोटा वेद है।
- सामवेद के मंत्रों को सामानि कहा जाता है।

Note- ऋग्वेद में मंत्र- ऋचा

यजुर्वेद में - यूजंथि

- सामवेद व ऋग्वेद को दम्पति के रूप में जाना जाता है।
- चंद्रमा सूर्य के प्रकाश के कारण चमकता है, यह सबसे पहले सामवेद में ही लिखा हुआ मिला है।
- भारतीय संगीत के सात स्वर- सा, रे, गा, मा, पा, धा, नि सामवेद से लिए गए हैं।
- कर्नाटक संगीत के स्वर तथा हिंदुस्तानी स्वर सामवेद से लिए गए हैं।
- सामवेद में सबसे ज्यादा प्रमुखता सूर्य (सविता) को दी गई है। इस वेद में सूर्य की स्तुति सर्वाधिक बार की गई है।
- सामवेद तीन पाठों में विभक्त है -
  1. गुजरात की कौथुम संहिता
  2. महाराष्ट्र की राणायनीय संहिता
  3. कर्नाटक की जैमिनीय संहिता
- सामवेद भारतीय संगीत से संबंधित वेद है।
- सामवेद का प्रथम दृष्टा वेदव्यास के शिष्य जैमिनी हैं।

3. यजुर्वेद

- यह कर्मकांण्ड पर आधारित वेद था।
- इसमें यज्ञ संबंधी सूक्तों का संग्रह किया गया है।
- इसमें कुल दो भाग हैं

  (i) शुक्ल यजुर्वेद और (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- शुक्ल यजुर्वेद को ही असली यजुर्वेद माना गया है। वेद के इस भाग को वाजसनेयी संहिता कहा गया है।
- वाजसनेयी संहिता के दृष्टा वाज सेन के पुत्र याज्ञवल्क्य थे।
- वाजसनेयी संहिता को दो भागों में बांटा गया है -

  (i) काण्व और (ii) माध्यन्दिन।
- इस वेद को पाँच शाखाओं में बांटा गया है।

(1) काठक
(2) तैत्तिरीय
(3) मैत्रायणी
(4) कपिष्ठल
(5) वाजसनेयी

- केवल वाजसनेयी संहिता का आधार शुक्ल यजुर्वेद है।
- प्रथम चार शाखाएं कृष्ण यजुर्वेद से संबंधित हैं।
- यजुर्वेद गद्य व पद्य दोनों में लिखा गया है, अर्थात यह एकमात्र वेद है जो इस प्रकार लिखा हुआ है।
- यह चम्पू शैली का वेद है।
- यजुर्वेद की कृष्ण यजुर्वेद की शाखा दक्षिण भारत में विकसित हुई।
- यजुर्वेद की शुक्ल यजुर्वेद की शाखा उत्तर भारत में विकसित हुई थी।
- यजुर्वेद में यजु का अर्थ यज्ञ होता है।
- इस वेद में बलिदान विधि का वर्णन किया गया है।
- इस वेद में सर्वप्रथम नक्षत्रों का विवरण मिलता है।
- देश शब्द का पहला उल्लेख शुक्ल यजुर्वेद में मिलता है।
- भारत में विधवा विवाह का पहला उल्लेख तैत्तिरीय संहिता में मिलता है।
- इस वेद का रचनाकाल - 1000 ई. पू. से 600 ई. पू. है।
- कृष्ण यजुर्वेद ब्रह्म सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व करता है।
- शुक्ल यजुर्वेद में विदेशियों को म्लेच्छ कहा गया है।
- इसी यजुर्वेद में मत्स्यावतार द्वारा मनु को बचाने की जलप्लावन शुक्ल कथा का वर्णन मिलता है।
- शुक्ल यजुर्वेद में पुनर्जन्म की कथा का वर्णन मिलता है।
- कृष्ण यजुर्वेद के उपनिषद

(1) कठोपनिषद - यम नचिकेता का संवाद का वर्णन, आत्मा की अमरता का उल्लेख।

(2) मैत्रायणी उपनिषद : इसमें हर्यक वंश के राजा अजातशत्रु का उल्लेख मिलता है।

(3) श्वेताश्वर - इसमें भौतिक जगत की अवधारणा दी गई है।

(4) शुकर रहस्य उपनिषद:-

(5) तैत्तिरीय उपनिषद - अतिथि सत्कार की भावना।

4. अथर्ववेद

- सबसे नया वेद है।
- यह वेदत्रयी से बाहर है।
- इस वेद की रचना सबसे बाद में हुई।
- अथर्ववेद जादू-टोना, तंत्र मंत्र आदि क्रियाओं से संबंधित है।
- अथर्ववेद में सबसे शक्तिशाली महाजनपद मगध का उल्लेख हुआ है।
- अथर्ववेद का पहली बार उल्लेख इसी वेद में हुआ है।
- 'माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्याः' अर्थात- धरती मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ, यह उक्ति इसी वेद में मिलती है।
- इसी वेद में ब्रह्म ज्ञान की पहली बार जानकारी मिलती है।
- अथर्ववेद के दो पाठ हैं -

  (1) शौनकीय (2) पैप्लादि
- ऋग्वेद की तरह अयोध्या का उल्लेख इस वेद में भी हुआ है।
- इस वेद के अनुसार युद्ध का आरंभ मस्तिष्क से होता है।

- इसमें पृथ्वी माता की तुलना गाय से की गई है।
- इसमें रोग - निवारण, विवाह, भूत-प्रेत जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।
- इसमें रोग-नाशक जड़ी बूटियों का वर्णन भी किया गया है।
- इस वेद की ब्रह्मवेद/पुरोहित वेद/श्रेष्ठ वेद भी कहा जाता है।
- अथर्वा नामक ऋषि इसके प्रथम दृष्टा थे, इन्हीं के नाम पर इसका नाम अथर्ववेद पड़ा था।

वेद व उनके उपवेद: कुल उपवेद 4 हैं।

वेद	**उपवेद**
ऋग्वेद	आयुर्वेद
यजुर्वेद	धनुर्वेद
सामवेद	गन्धर्ववेद
अथर्ववेद	शिल्पवेद

- **वेदों में यज्ञ करवाने वाले पुरोहितों को निम्न रूप से जानते थे –**

वेद	**यज्ञ कराने वाले पुरोहित**
ऋग्वेद	होता (होतृ)
यजुर्वेद	अध्वर्यु
सामवेद	उद्गाता
अथर्ववेद	ब्रह्मा

- **वेद व उनके ब्राह्मण ग्रंथ –**

वेद	**ब्राह्मण ग्रंथ**
ऋग्वेद	ऐतरेय, कौषीतिकी
यजुर्वेद	शुक्ल यजुर्वेद-शतपथ, कृष्ण यजुर्वेद - तैत्तिरीय
सामवेद	षड्विंश, पंचविंश, जैमिनीय
अथर्ववेद	गोपथ

- **वेद व उनके उपनिषद् :**

वेद	**उपनिषद्**
ऋग्वेद	**ऐतरेय, कौषीतिकी**
सामवेद	**छान्दोग्य, केन, जैमिनीय**
अथर्ववेद	**मुण्डक, माण्डुक्य, प्रश्न**
यजुर्वेद	**शुक्ल यजुर्वेद - बृहदारण्यक, ईशश**
	कृष्ण यजुर्वेद - कठ, मैत्रायणी, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर

वेदांग

- वेदों को सरलता से समझने के लिए वेदांगों की रचना की गई।

वेदांग की संख्या 6 है।

- वेदांगों का सही क्रम से वर्णन/उल्लेख सर्वप्रथम मुण्डकोपनिषद् में मिलता है।
- वेदांग वैदिक साहित्य का भाग नहीं है।

प्रमुख वेदांग

वेदांग	वेद की नायिका	(रचना-वामज्य ऋषि)
कल्प	वेद के हाथ	(रचना-गौतम ऋषि)
व्याकरण	वेद के मुख	(रचना-पाणिनी)
निरुक्त	वेद के कान	(रचना-यास्क)
छन्द	वेद के पैर	(रचना-पिंगल मुनि)
ज्योतिष	वेद की आँख	(रचना-लघद मुनि)

उपनिषद

- उप का अर्थ - समीप, नि का अर्थ - निष्ठापूर्वक, षद् का अर्थ - बैठना।
- उपनिषद गद्य व पद्य दोनों शैलियों में मिलते हैं।
- उपनिषद को वेदान्त दर्शन भी कहा जाता है।
- यह मुख्यतः ज्ञानमार्गी रचनाएं हैं।
- उपनिषद + ब्रह्मसूत्र + भगवद्गीता को प्रस्थान त्रयी कहा जाता है।
- कुल उपनिषद - 108, प्रमाणिक उपनिषद - 12
    1. ईश
    2. केन
    3. ऐतरेय
    4. कौषीतिकी
    5. बृहदारण्यक
    6. श्वेताश्वतर
    7. कठ
    8. प्रश्न
    9. मुण्डक
    10. माण्डूक्य
    11. तैत्तिरीय
    12. छान्दोग्य
- सबसे प्राचीन उपनिषद - छान्दोग्य
- सबसे नवीन उपनिषद - मैत्रायणी
- सबसे बड़ा उपनिषद - बृहदारण्यक
- सबसे छोटा उपनिषद - माण्डूक्य
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।
- बृहदारण्यक यजुर्वेद का उपनिषद है।
- बृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी-मैत्रेय संवाद मिलता है।
- बृहदारण्यक उपनिषद में - **सर्वे भवन्तु सुखिनः तमसो मा ज्योतिर्गमय अहम् ब्रह्मास्मि**
- मैत्रायणी उपनिषद में त्रिमूर्ति की अवधारणा दी गई है।
- मुण्डक उपनिषद में यज्ञों को टूटी नाव की तरह अविश्वसनीय बताया है।
- मुण्डक उपनिषद में संसार को मकड़ी के जाल के समान बताया है।
- माण्डूक्य उपनिषद में ॐ की महत्ता का उल्लेख मिलता है।
- सत्यकाम जाबाल की कथा, जो अनब्याही माँ होने के लांछन को चुनौती देती है, छान्दोग्य उपनिषद में है।
- सदा सत्य बोलो एवं अतिथि देवो भवः, तैत्तिरीय उपनिषद में है।
- जाबालोपनिषद में आश्रम व्यवस्था का वर्णन मिलता है - चार आश्रम

ब्राह्मण ग्रंथ

- वेदों की सरल व्याख्या के लिए ब्राह्मण ग्रंथ लिखे गए।
- ये गद्य में लिखे गए हैं।
- ब्राह्मण ग्रंथों का वेदों का परिशिष्ट माना जाता है।
- ब्राह्मण ग्रंथों का मुख्य विषय - यज्ञकर्म का विधान
- रुद्र की महिमा का विशेष वर्णन कौषीतिकी ब्राह्मण में मिलता है।
- शतपथ को लघु वेद भी कहा जाता है।
- शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ वेदी के स्वरूप की तुलना स्त्री से की गई है।
- वेतिरीय ब्राह्मण में तीन ऋण तथा पंचमहायज्ञ का उल्लेख मिलता है।

  तीन ऋण - ऋषि ऋण, पितृ ऋण तथा देव ऋण

  पंचमहायज्ञ - ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्य यज्ञ, भूतयज्ञ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक से संबंधित नियम प्रणाली का उल्लेख मिलता है।
- षडविंश में इन्द्र तथा अहल्या का आख्यान मिलता है।
- शतपथ ब्राह्मण में कुलाल चक्र (कुम्हार का चाक) का उल्लेख मिलता है।
- शुनःशेप की कथा ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में मिलती है।
- ऐतरेय ब्राह्मण में सर्वप्रथम चार वर्णों के कर्तव्यों का उल्लेख हुआ है।

<u>महाकाव्य</u>

महाभारत -

- रचना-महार्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने
- इसमे पर्व - 18
- महाभारत का प्राचीन नाम-जयसंहिता
- महाभारत की रचना गुप्तकाल में पुर्ण हुई।
- महाभारत का सर्वप्रथम उल्लेख आश्वलायन गृह सुत्र में मिलता है।
- इसे पंचम वेद भी कहा जाता है।
- गुप्तकाल में श्लोक 1 लाख होने पर इसका नाम महाभारत रखा गया ।
- जब श्लोक 8800 थे तब नाम जयसंहिता

  श्लोक 24000 - भारत

  श्लोक 1 लाख - महाभारत
- महाभारत को शतसाहस्त्री संहिता भी कहा जाता है।
- इसके कुल 18 पर्वो में सबसे बड़ा पर्व शंति पर्व है।
- महाभारत का युद्ध हरियाणा, कुरुक्षेत्र मे लड़ा गया जो 18 दिन चला।
- भगवद्गीता महाभारत के 6 वें पर्व भीष्म पर्व का ही भाग है

  गीता की रचना - महर्षि वेदव्यास ने की थी।
- इसमे भगवान कृष्ण तथा अर्जुन के मध्य का संवाद मिलता है।
- भगवद्गीता को स्मृति प्रस्थान भी कहा जाता है।
- यह हिन्दु धर्म की सबसे पवित्र पुस्तक मानी जाती है।
- भगवद्गीता का प्रयोग भारतीय न्यायालय में भी किया जाता है
- महाभारत विश्व का सबसे बड़ा महाकाव्य है।

रामायण

- रचना - महर्षि वाल्मीकी
- वाल्मीकी का वास्तविक नाम रत्नाकार बताया जाता है।
- रामायण में कुल श्लोक 24000 है।
- इसे चतुर्विंशतिसाहस्त्री संहिता कहा जाता है।
- महाभारत की रचना गुप्तकाल में हुयी थी।
- महाभारत की तरह इसे भी पांचवा वेद कहा जाता है।
- रामायण में कुल सात काण्ड है-

1. बाल काण्ड
2. अयोध्या काण्ड
3. अरण्य काण्ड
4. किष्किन्धा काण्ड
5. सुन्दर काण्ड
6. लंका काण्ड
7. उतर काण्ड।

- सबसे छोटा काण्ड किष्किन्धा काण्ड है।
- रामायण का सबसे बड़ा काण्ड लंका काण्ड है।
- रामायण तथा महाभारत दोनो महाकाव्य है। इनकी रचना संस्कृत भाषा में हुयी है।

पुराण

- शाब्दिक अर्थ-प्राचीन आख्यान होता है।
- पुराणों की रचना लोमर्हष व उनके पुत्र उग्रश्रवा ने की थी।
- पुराणों की संख्या - 18
- उपपुराण - 18
- मत्स्य, वायु, विष्णु, ब्रह्माण्ड तथा भागवत पुराण में भारतीय इतिहास के राजवंशो का वर्णन मिलता है।
- सभी पुराणों में सबसे प्राचीन तथा सबसे प्रमाणिक पुराण मत्स्य पुराण को माना जाता है।
- अमरकोष मे पुराणों के षँाच विषय मिलते है-

1. सर्ग
2. प्रति सर्ग सृष्टि
3. वंश
4. मन्वन्तर
5. वंशानुचरित

- "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादापि गरीयसी" का उल्लेख भागवत पुराण में है।
- मत्स्य पुराण में लिंग पुजा का प्रथम उल्लेख मिलता है।

धर्मशास्त्र/स्मृतियां

- धर्मसुत्रो के कारण स्मृति ग्रंथो का विकास हुआ, इसलिय स्मृतियों को धर्मशास्त्र भी कहा जाता है।
- प्रमुख स्मृतियाँ - मनुस्मृति, बृहस्पति स्मृति, वशिष्ट स्मृति कात्यायन स्मृति गौतम स्मृति, देवल स्मृति, याज्ञवलक्य स्मृति तथा नारद स्मृति ।
- सबसे प्रचीन स्मृति मनुस्मृति है। इसकी रचना शुंग काल में हुई है।
- मनुस्मृति के भाष्यकार = मेधातिथि, गेविन्दराज, भारुचि, रामचंद्र रघुनन्दन।

- नारद स्मृति का टीकाकार असहाय है।
- याज्ञवलक्य स्मृति के टीकाकार - विश्वरूप, विज्ञानेश्वर तथा अपरार्क है।
- विज्ञानेश्वर की टीका का नाम मिताक्षरा है।
- पाराशार स्मृति में सर्वप्रथम कृषि को ब्राह्मण धर्म की वृति बताया गया है।
- पाराशर स्मृति के टीकाकार माधवाचार्य थे।
- माधवाचार्य जी ने सर्वदर्शन संग्रह नामक पुस्तक लिखी।
- विष्णु स्मृति पद्य मे लिखी गयी है।
- मनुस्मृति सबसे प्राचीन है इसकी रचना शुंग काल में (200 ई. पु. से 200 ई.)
- याज्ञवलक्य स्मृति की रचना 100 ई. -300 ई. में मौयोतर काल मे हुई।
- नारद स्मृति , पाराशर स्मृति, कात्यायन स्मृति, बृहस्पति स्मृति तथा देवल स्मृति की रचना 300 ई. -550 ई. तक गुप्त काल मे हूई।
- मनुस्सति को शुंग काल का मानक ग्रथं माना जाता है।
- याज्ञवलक्य स्मृति के प्रमुख टीकाकार विज्ञानेश्वर कल्याणी के चालुक्य राजा विक्रमादित्य षष्ठम के दरबारी थे।

Toppersnotes
Unleash the topper in you